Aaj ka Anand July 7, 2015

बच्चों में सीखने की बहुत भूख होती है, स्कूल उसे दबा देते हैं

साइंटिस्ट, लेखक और साइंटिफिक खिलौना बनाने वाले मशहूर शख्सियत अरविन्द गुप्ता से बातचीत

आमतौर पर व्यक्ति एक चीज की भी खोज करे तो उसकी पहली प्राथमिकता उस आविष्कार का पेटेंट लेने की होती है लेकिन साइंटिस्ट अरविन्द गुप्ता इस मामले में बिल्कुल अलग हैं. गरीब बच्चों के लिए कचरे से खिलौने बनाकर गणित और विज्ञान की शिक्षा खेल-खेल में देने के लिए वे अनूठे तरीकों से एक हजार से ज्यादा खिलौने बना चुके हैं. उन्होंने इनका डॉक्यूमेंटेशन भी किया है और हजारों वीडियो भी बनाए हैं लेकिन अपनी इन खोजों पर पेटेंट लेने के बारे में उन्होंने कभी नहीं सोचा. इन मजेदार खिलौनों से विज्ञान को लोकप्रिय बनाने की इस मुहिम के चलते वे 20 देशों के तीन हजार से ज्यादा स्कूलों में वर्कशॉप कर चुके हैं. अब तक लाखों विद्यार्थी उनके बनाए खिलौनों से रोचक तरीके से शिक्षा पाने की दिशा में लाभान्वित हो चुके हैं. यूट्यूब पर इन खिलौनों के वीडियो को अब तक साढ़े चार करोड़ से ज्यादा लोग देख चुके हैं, जो सोशल नेटवर्क की दुनिया में एक रिकॉर्ड है. बकौल अरविन्द बच्चों में छुपी नैसर्गिक प्रतिभा को उभारने और गरीब बच्चों को अपने हाथ से खिलौने बनाने की कला सिखाने के लिए ये अनूठा रास्ता अपनाया है. मशहूर टॉय इन्वेन्टर अरविन्द गुप्ता से दै.'आज का आनंद' की विशेष संवाददाता श्रद्धा जैन की बातचीत -

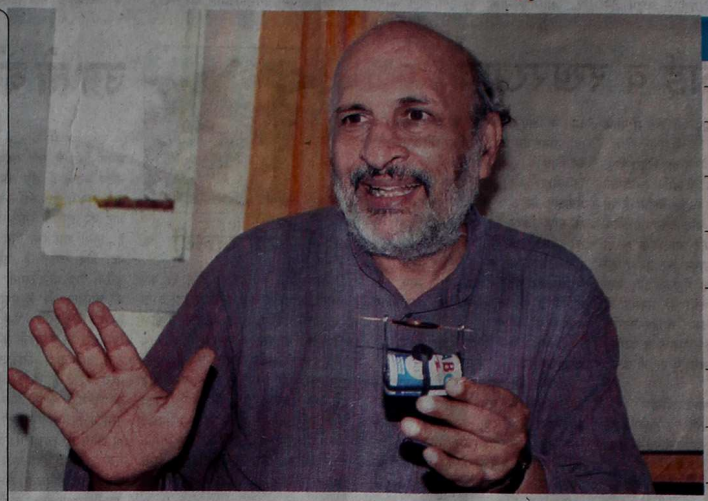

अरविन्द गुप्ता : एक नजर में

- जन्मदिन - 4 दिसंबर 1953
- कैरियर की शुरुआत - 1975 में टेल्को से
- आईआईटी कानपुर में बीटेक करने के दौरान गरीब बच्चों को 5 साल मुफ्त में पढ़ाया
- 14 साल दिल्ली में रहते हुए 300 स्कूलों में बेकार चीजों से खिलौने बनाने सिखाए
- आयुका, पुणे यूनिवर्सिटी में 11 साल मुक्तांगण विज्ञान शोधिका के को-आर्डिनेटर रहे
- 2004 में Toys from Trash वेबसाइट बनाई, इसमें 1300 प्रकार के खिलौने बनाने के वीडियो, फोटो दी गई हैं
- वेबसाइट पर 18 भाषाओं में 6000 वीडियो हैं, जिन्हें यूट्यूब पर 4 करोड़ लोग देख चुके हैं
- कई भारतीय भाषाओं में 4500 किताबें वेबसाइट से फ्री डाउनलोड करने की सुविधा है
- अब तक 25 किताबें लिख चुके हैं और 175 किताबों का अनुवाद कर चुके हैं
- 20 देशों के 3000 से ज्यादा स्कूलों में वर्कशॉप और लेक्चर दे चुके हैं
- संपर्क - 020-25651415 मो. 7350288014

?. आपके फैमिली बैकग्राउंड के बारे में बताएं? आपकी एजुकेशन कहां से हुई?

अरविन्द गुप्ता : मैं उत्तर प्रदेश के बरेली शहर से हूं. मेरे माता-पिता दोनों ने ही कभी स्कूल का मुंह नहीं देखा था. पापा का साबुन बनाने का छोटा सा कारखाना था, जिसमें उन्हें हमेशा नुकसान होता रहता था, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहती थी. मेरी मां के दोनों बड़े भाई बहुत पढ़े-लिखे थे, मेरे एक मामा ने स्विट्जरलैंड से इंजीनियरिंग की थी, तो दूसरे मामा आगरा मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल रहे हैं. उस समय लड़कियों को नहीं पढ़ाया जाता था, लिहाजा मां नहीं पढ़ पाईं. लेकिन वो हम बच्चों को बहुत पढ़ाना चाहती थीं. हम तीन भाई और एक बहन को मेरी मां ने परिवार-रिश्तेदारों के विरोध के बावजूद भी अपने गहने बेच-बेच कर कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ाया. इसके बाद हम सभी ने स्कॉलरशिप के दम पर अपनी हायर एजुकेशन पूरी की. मेरी मां के अडिग निर्णय और सपोर्ट के कारण ही मेरे एक भाई पीडियाट्रिशियन और दूसरे इंजीनियर बन सके. मेरी बहन ने फिजिक्स से एमएससी की और मैं आईआईटी कानपुर से बी.टेक. कर पाया. आईआईटी एंट्रेंस में मेरी ऑल इंडिया रैंक अच्छी होने के कारण मुझे स्कॉलरशिप मिली और कानपुर आईआईटी में पूरे पांच साल मेरी ट्यूशन फीस फ्री रही. इसके अलावा हर महीने मुझे स्कॉलरशिप के 100 रुपए मिलते थे, जिससे मेरे मेस की फीस भरी जाती थी. उस समय हमारे घर में खाने के भी लाले थे, लिहाजा मेरा घर से बाहर रहना ही मेरे पिताजी को बेहतर लगा था. इस तरह मैंने इलेक्ट्रिकल ब्रांच से इंजीनियरिंग पूरी की.

साइकिल के पहिए में लगने वाली ट्यूब, माचिस की तीली, कचरे में पड़ा वायर या बोतल, झाड़ू की सींक जैसे सामानों से मैं ये खिलौने बनाता था.

?. आपने कैरियर कहां से शुरू किया? खिलौनों की दुनिया में एंट्री कैसे हुई?

अरविन्द गुप्ता : बचपन से ही मेरी ख्वाहिश थी कि मैं स्कूल टीचर बनूं, जो बखूबी पूरी भी हुई. आज मैं केवल एक स्कूल नहीं बल्कि हजारों स्कूलों के बच्चों को अलग तरीके से सिखा रहा हूं. गरीब बच्चों को हाथ से खिलौने बनाना सिखा रहा हूं. बीटेक के दौरान मैंने जरूरतमंद बच्चों के लिए कैंपस में स्थापित किए गए स्कूल में पांच साल तक फ्री में पढ़ाया. टीचिंग या सोशल वर्क की दिशा में यह मेरा पहला कदम था. बीटेक करने के तुरंत बाद मुझे सर्वाइवल के लिए जॉब करना जरूरी था. लिहाजा मैं कैंपस प्लेसमेंट में बैठा और टेल्को की नौकरी करने पुणे आ गया. 1975 में मैंने टेल्को जॉइन की और दो साल की बेस ट्रेनिंग को बहुत एंजॉय किया. वहां अपने हाथों से चीजें बनाईं, जो मेरा पैशन है. बड़े ऑर्गेनाइजेशन के कल्चर को एंजॉय किया लेकिन जल्द ही मैं बोर हो गया. कॉलेज के दिनों में मशहूर शिक्षाविद अनिल सद्गोपाल का एजुकेशन सिस्टम पर लेक्चर सुना था, उससे बहुत प्रभावित हुआ था. ग्रामीण इलाकों में प्रायोगिक शिक्षा देने के लिए स्थापित की गई संस्था किशोर भारती के बारे में सुना था. 2 साल की नौकरी के बाद मैंने उन्हें पत्र लिखा और 15 दिन की छुट्टियां उनके साथ काम करते हुए बिताने की इच्छा जताई. उन्होंने हां कह दिया और मुझे मध्य प्रदेश बुलाया. इसके बाद तो मेरी जिंदगी की दिशा ही बदल गई.

?. 15 दिनों की छुट्टियों ने कैसे आपका जीवन बदल दिया?

अरविन्द गुप्ता : 15 दिन खत्म होते ही उन्होंने मुझसे एक साल की छुट्टी लेकर वहीं गांव में काम करने को कहा. मैंने कहा कि ये तो संभव नहीं है. टेल्को मुझे इस काम के लिए एक साल की छुट्टी नहीं देगी और नौकरी छोड़ना फिलहाल मेरे लिए संभव नहीं है. किशोर भारती को टाटा ट्रस्ट ही फंडिंग दे रहा था, उसके चेयरमैन सद्गोपाल जी को अच्छी तरह जानते थे और उनका रिस्पेक्ट भी करते थे. सद्गोपालजी ने उन्हें मुझे एक साल की छुट्टी देने के लिए चिट्ठी लिख दी और मुझे तुरंत छुट्टी मिल गई. उन्होंने मुझे मध्य प्रदेश के वनखेड़ी कस्बे में भेज दिया. वहां मैं साप्ताहिक बाजार से छोटी-मोटी चीजें खरीदता था और उनसे खिलौने बनाता था. फिर बच्चों को वो खिलौने बनाना और उसके पीछे के विज्ञान को सिखाता था. वाकई में टेल्को में ट्रक डिजाइन करने से ज्यादा मजा मुझे खिलौने बनाने में आया, जिससे कई गरीब बच्चों का बचपन खिलौनों से महरूम रहने से बच गया. साइकिल के पहिए में लगने वाली ट्यूब, माचिस की तीली, कचरे में पड़ा वायर या बोतल, झाड़ू की सींक जैसे सामानों से मैं ये खिलौने बनाता था. इस तरह मेरा इस फील्ड में रुझान बढ़ता गया. इस क्षेत्र में ज्यादा काम करने के लिए मैं 8 महीने बाद त्रिवेन्द्रम गया.

?. त्रिवेन्द्रम में क्या किया?

अरविन्द गुप्ता : वहां मैं दुनिया के मशहूर आर्किटेक्ट लॉरी बेकर के पास गया. वे महात्मा गांधी के जबरदस्त फॉलोअर थे और त्रिवेन्द्रम में बेहद कम कीमत में गरीबों के लिए घर बनाने का काम कर रहे थे. लोकल मटेरियल से मजदूरों, शिक्षकों के लिए बनाए गए उनके घर बेहद खूबसूरत होते थे. 4 महीने बाद मेरी एक साल की छुट्टी खत्म हुई मैं वापस जॉब पर लौटा. 1980 में मैंने जॉब छोड़ दी और अपने पैशन को पूरा करने के लिए फ्रीलॉन्सिंग शुरू कर दी. मैंने स्कूलों में जाकर वर्कशॉप लेना शुरू किया. 1984 में 'मैचोस्टिक नाउंस एंड अदर साइंस एक्सपेरीमेंट' बुक लिखी. इस किताब को मिनिस्ट्री ऑफ साइंस एंड टेक्नॉलॉजी से मुझे फैलोशिप मिली थी. इसका नियम है कि पहली बार में किताब की 2000 प्रतियां ही छापी जाती हैं, लेकिन मेरी किताब की पहले संस्करण में ही 25 हजार प्रतियां छापी गईं. अब ये किताब 12 भाषाओं में है. इसके बाद एक के बाद एक मैंने 25 किताबें लिखीं. इन सभी किताबों में मैंने साइंटिफिक मॉडल और खिलौनों की बनाने की विधियां और फोटो दी हैं.

?. फिर आयुका कब जॉइन किया?

अरविन्द गुप्ता : 1989 में मेरी वाइफ को पीएचडी करने के लिए जूनियर रिसर्च फैलोशिप मिली. उनकी पीएचडी के लिए दिल्ली शिफ्ट हो गए और लगभग 15 साल वहीं रहे. वहां भी मैंने स्कूलों में वर्कशॉप-लेक्चर लेने, किताबें लिखने-अनुवाद करने का काम जारी रखा. कई साल नेशनल बुक ट्रस्ट के एडवाइजरी बोर्ड पर रहा. 2003 में जब हम वापस पुणे शिफ्ट हुए तो यहां आयुका (द इंटर-यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्ट्रोनॉमी एंड एस्ट्रोफिजिक्स, पुणे) में पूल. देशपांडे और नारळीकर साहब मुक्तांगण विज्ञान शोधिका शुरू कर रहे थे, उन्होंने मुझे इसका को-आर्डिनेटर बना दिया. उनकी सोच थी कि बच्चों के मन में विज्ञान के बीज बोएंगे तो ही बाद में देश को अच्छे साइंटिस्ट मिलेंगे. यकीन मानिए, वहां 400 स्क्वेयर फीट के कमरे में हम 4-5 लोग काम करते थे. वहां काम कर रहे लोग विदेशों से पढ़े थे या विदेशों की अच्छी नौकरियां छोड़कर यहां काम कर रहे थे. हर दिन हम नए-नए खिलौने बनाते थे, फिर उनकी वीडियो बनाते थे. 2004 में मैंने टॉय फ्रॉम ट्रेश वेबसाइट बना ली थी. लिहाजा इस वेबसाइट पर वीडियो, फोटो, किताबों की पीडीएफ डालने का सिलसिला भी शुरू कर दिया था. उन दिनों में शायद ही कोई दिन ऐसा गया होगा कि जिस दिन हमने कोई वीडियो न बनाया हो या साइट पर न डाला हो. वो मेरी जिंदगी का बेहतरीन समय था. तब से आज तक हम सोशल नेटवर्किंग साइट्स और अपनी वेबसाइट के जरिए नॉलेज शेयरिंग का सिलसिला लगातार चला रहे हैं. मैंने 11 साल आयुका में काम किया. बाद में प्रोस्टेट कैंसर के ट्रीटमेंट के लिए मुझे आयुका छोड़ना पड़ा. तब से मैं घर पर ही काम करता हूं.

?. फिलहाल आप किन प्रोजेक्ट में बिजी हैं? आपका ड्रीम क्या है?

अरविन्द गुप्ता : मैं दुनिया भर के बेस्ट बाल साहित्य और शिक्षा की किताबों का हिन्दी अनुवाद करके और उनकी पीडीएफ बनाकर अपनी वेबसाइट पर डालने का काम कर रहा हूं. हर दिन 7 से 8 घंटे मैं यही मुख्य काम करता हूं. देश के लगभग 7 राज्यों में हिन्दी बोलने वाले 40 करोड़ लोग हैं. फिर भी हिन्दी में शैक्षणिक और बाल साहित्य उतना समृद्ध नहीं है, जितना होना चाहिए. आप मराठी को ही लीजिए, इस भाषा को बोलने वाला एक ही राज्य है फिर भी इसका साहित्य बहुत अच्छा है. मेरी जिंदगी का मकसद है कि मैं दुनिया के सबसे अच्छे बाल साहित्य और शिक्षा की ज्यादा से किताबों का अनुवाद कर सकूं और बच्चों के लिए ये अपनी वेबसाइट के जरिए फ्री में उपलब्ध करा सकूं. अपनी इस मुहिम के तहत मैं अब तक 175 किताबों का अनुवाद कर चुका हूं. कई भारतीय भाषाओं की शिक्षा और बाल साहित्य की किताबों को स्कैन करके उनका पीडीएफ बनाकर भी मैं अपनी वेबसाइट पर डालता हूं. मेरी लिखी किताबें 18 भारतीय भाषाओं में मेरी वेबसाइट पर हैं. मेरा एक ही मकसद है कि न केवल देश बल्कि पूरी दुनिया के बच्चों को किताबें, वीडियो, मेरे बनाए खिलौनों को बनाना सीखने के तरीके फ्री में उपलब्ध कराऊं, ताकि ज्ञान पाने के रास्ते में गरीबी या संसाधनों की कमी आड़े न आए. अभी मेरी वेबसाइट पर साढ़े चार हजार किताबें भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं, जिन्हें कोई भी फ्री में डाउनलोड कर सकता है.

?. आपके बनाए खिलौने इतने लोकप्रिय हैं, आप पेटेंट के लिए अप्लाई क्यों नहीं करते हैं?

अरविन्द गुप्ता : अच्छी बात पूछी आपने. देखिए, न तो मैं दुनिया में कुछ लेकर आया था और न लेकर जाऊंगा. फिर पेटेंट किसलिए लेना? मैंने जो बनाया है, वो दुनिया के जरूरतमंद बच्चे के काम आ सके, इससे बड़ा अवॉर्ड या पेटेंट क्या होगा. न केवल हमारे देश में बल्कि दुनिया के कई देशों में गरीबी के चलते हर बच्चा खिलौना नहीं खरीद सकता. जब वो कचरे या बेकार सामान से अपना खिलौना खुद बनाकर खेलता है, उस समय उसकी खुशी ही मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि होती है. ये खिलौने न केवल उनके बचपन का अहम हिस्सा बनते हैं, बल्कि इससे वो बहुत कुछ सीखते भी हैं. उन्हें पता चलता है कि उनका इंट्रेस्ट किस ओर है.

अभी मेरी वेबसाइट पर साढ़े चार हजार किताबें भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं, जिन्हें कोई भी फ्री में डाउनलोड कर सकता है.

?. अपने बच्चों की शिक्षा और उन्हें प्रैक्टिकल नॉलेज देने के क्षेत्र में बहुत काम किया है. देश के मौजूदा एजुकेशन सिस्टम में आपको क्या बड़ी कमियां लगती हैं?

अरविन्द गुप्ता : स्कूलों में बच्चों को रटवाकर या उनकी कमियां निकालकर उन पर ठप्पा लगाने की जो प्रवृत्ति है, वो बहुत खराब है. पढ़ाने का ये तरीका बच्चों की नैसर्गिक प्रतिभा को दबा देता है. जबकि बच्चे तो ज्ञान की नई चीजों को सीखने के बहुत भूखे होते हैं, लेकिन चुनी हुई किताबें रट कर परीक्षा देने का सिस्टम उनकी सीखने की ललक को खत्म कर देता है. जबकि होना इसके उल्टा चाहिए. स्कूलों को बच्चों की प्रतिभा को उभारने का काम करना चाहिए कि बच्चे में क्या टैलेंट है, उसे आगे बढ़ाने में शिक्षक उनकी मदद करे. ऐसे शिक्षक समाज में हैं भी लेकिन उनकी संख्या बहुत कम है.

?. आपकी फैमिली में कौन-कौन हैं?

अरविन्द गुप्ता : मेरी पत्नी प्रो. सुनीता फर्ग्यूसन कॉलेज में समाजशास्त्र पढ़ाती हैं. मैंने जिंदगी में ज्यादातर समय फ्रीलॉन्सिंग की है. आयुका में जॉब की भी तो वहां सैलरी केवल 20 हजार रुपए थी. (हंसते हुए) अक्सर मेरे परिचित मुझे कहते हैं कि तुम इतना सब इसलिए कर पाए क्योंकि तुम्हारे पास लाइफ इंश्योरेंस की तरह वाइफ इंश्योरेंस था. सर्वाइवल के लिए उसकी सैलरी तो थी ही. मेरी बेटी डॉ. दुलारी सीएमसी वेल्लोर में है. उसने वहीं से एमडी पीडियाट्रिक किया है. मेरे दामाद ध्रुव शेषाद्रि आईआरएस हैं, वे वेल्लोर में ही एक्साइज में असिस्टेंट कमिश्नर हैं.